बे–दुम का बन्दर की प्रासंगिकता

डॉ. प्रविण कांबळे
हिंदी विभाग प्रमुख तथा शोध मार्गदर्शक
श्री कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा
जि : लातुर

हिंदी व्यंग साहित्य में डॉ. ज़र्रा जी का महत्वपुर्ण योगदान रहा है। उन्होंने व्यंग के माध्यम से समसामायिक परिवेश पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की हैं। इनकी प्रतिक्रिया में चुलबुलाहट है, व्यंग है, हास्य है, एक कठोर प्रहार भी है। डॉ. ज़र्रा ने अपनी रचना 'बे–दुम का बन्दर' के स्वकथ्य में लिखा है कि ''जीवन–यापन करते हुए जो विविध अनुभवों को अभिव्यक्त करने का साहस मैं ने यहाँ हास्य–व्यंग के माध्यम से किया है। हास्य–व्यंग शैली में अनुभव कथन करते हुए काफी मजर भी आया है। कहीं–कहीं जीवन के विविध रंगों को भी छूने का प्रयास किया है।[1]'' इस प्रकार उन्होंने एक ओर जीवन की अनुभूति द्वारा सामाजिक व्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था और मानवता पर काफी व्यंग किया है, तो दुसरी ओर देशभक्ति की प्रेरणा, सोए हुए देश को जगाना, वास्तविक प्रेम, दुसरों के जीवन में चिराग बनने की प्रेरणा, जिंदगी की मंजिल और भाईचारा का संदेश व्यंग के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

डॉ. ज़र्रा की रचना 'बे–दुम का बन्दर' काफी चर्चित हास्य–व्यंग रचना है। इस रचना में 78 मुक्त–पद हैं, तो 28 कविताएँ हैं। इस रचना के माध्यम से उपर्युक्त पहलुओं पर प्रकाश डाला जा रहा है। कवि अपनी अध्ययन शैलो व्याख्यानों के द्वारा पाठकों को हमेशा जागृत रहने की प्रेरणा दी है। डॉ. ज़र्रा जी ने नॉन–ग्रॉन्ट शिक्षा प्रणाली पर व्यंग किया है। नॉन–ग्रॉन्ट पर कार्य कर रहे अध्यापकों के 'ो"ाण पर प्रकाष डाला गया है। भूकंप और नॉन–ग्रॉन्ट अध्यापक के संवादों द्वारा पता चलता है कि भूकंप केवल जिंदों को मारता है। पर अध्यापकों को तो 'नॉन–ग्रॉन्ट' ने मारा है। जैसे –

''मैं ने जो भूकंप से पूछा, यार तूने मुझे क्यों नहीं मारा ?
भूकंप बोला, चुप ! हम तो जिंदों को मारते है।
तुझे ता पहले ही नॉन–ग्रॉन्ट ने मारा है।
फिर हम कैसे मार सकते है दुबारा।।[2]''

उनकी कविता में दे"ाभक्ति की भावना पायी जाती है। वे खुदासे वतन के लिए दे"ा के बच्चों–बुढ़ों में प्यार भरने की बात करते है। जैसे –

''ऐ खुदा ! वतन के लिए, तू ये काम कर देना।
मेरे दे"ा के बच्चों–बुढ़ों में, दे"ा के लिए प्यार भर देना।।[3]''

आगे वे जीवन के वास्तविकता को समझाते है कि हे युवक ! यह जवानी आती भी है और जाती भी है। इस पर इतराना नहीं। न जाने इस बात को जवान क्यों भूलता है। जैसे –

''कम्बख्त, जवानी क्या आ जाती,
वो कुछ ज्यादा ही इतराते हैं।
अरे ! एक दिन चली भी जाएगी,
वो ये क्यों? भूल जाते हैं।।[4]''

डॉ. ज़र्रा इन्सान को चिराग बनकर लोगों के जीवन के अंधेरों को मिटाने की प्रेरणा दी है। सूरज तो भावना 'ून्य है, फिर भी सारी दुनिया को रोषन कर देता है। अतः मानव तो भावपूर्ण है। इसलिए दुसरों के जीवन के दुःख रुपी अंधेरों को मिटाने की प्रेरणा दी है। जैसे –

''सूरज भावना शून्य होकर भी, जमाने को रो"ान कर देता है।
तू इतना तो कर ऐ भावुक इन्सान, चिराग़ बनकर अंधेरों को मिट।।[5]''

जीदंगी का मक्सद है मंजिल पाना। इसलिए मंजिल पाने के लिए सैंकडों रास्ते हैं। पर जिंदगी में कभी डरना नहीं है। मौत आने से पहले मरना नही है। जैसे –

''सैंकडों है मंजिलें, सैंकडों है रास्ते।
रास्ते पैदा हुए हैं, यार तेरे वास्ते।।
बाजुओं में दम है, गम कभी करना नहीं।
मौत आने से पहले, यार तुम मरना नहीं।।[6]''

अतं में कवि मानव को ऐकता का संदेष देते है। जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है भाईचारा। जन–जन में एक–सी धड़कन है। आकाष से बरसने वाला अमृत रुपी पानी है भारत का कण–कण। जैसे –

''हम हैं भाई–भाई, जन–जन,
सबके दिल में एक–सी धड़कन।
अम्बर से अमृत ज्यों बरसे,
पीता है भारत का कण कण।।[7]''

इस प्रकार कवि डॉ. ज़र्रा जी ने अपनी व्यंग्य वाणी द्वारा सोए हुए मानव को दे"ा भक्ति से प्रेरित करता है। इतना ही नहीं दे"ा के जवानों को अपनी जवानी का उपयोग दे"ा के लिए करणा चाहिए। बल्कि उस पर इठलाना नहीं चाहिए। और कवि ने सूरज से प्रेरणा लेने की बात कहकर मानव को मानव के भावुकता को जगाया है। मानव भाव पूर्ण है। इसलिए दुसरों के जीवन के दुःखों को दुर करने की प्रेरणा दी है। अंत में जीवन के मंजिल पाने तक लढ़ने की बात कही है। साथ ही मानवता का धर्म है भाईचारा। अतः जन–जन में भाईचारा हो यही उनकी वाणी की प्रासंगिकता है।

संदर्भ :

1. बे–दुम का बन्दर डॉ. ज़र्रापृ. 01
2. बे–दुम का बन्दर डॉ. ज़र्रापृ. 04
3. बे–दुम का बन्दर डॉ. ज़र्रापृ. 36
4. बे–दुम का बन्दर डॉ. ज़र्रापृ. 37
5. बे–दुम का बन्दर डॉ. ज़र्रापृ. 21
6. बे–दुम का बन्दर डॉ. ज़र्रापृ. 78
7. बे–दुम का बन्दर डॉ. ज़र्रापृ. 72

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com